

उ मराठी भाषींनी देशों को अनावृत्त वीथण 'मोट' जमीन के नाम के लिए  
लोचिनाम के राजा सिंगपूर II ने 1876 ई. में ब्रिटीश सरकार के साथ एक  
समझौता किया जो कि अंग्रेजी संस्था की स्थापना में ब्रिटीश देशों के साथ भाषी विवादों का शांतिपूर्ण  
रास्ता है।

- फ्रांसीसी ने जाँको की समस्या तथा अन्य विवादों के निपटारे के लिए माँग की। यह नवंबर १८०५ ई. से जून १८१४ ई. तक चला। इसमें धोपी में सभी यूरोपीय राज्यों को अपना भाँटा नहीं पारिवहन की व्यवस्था के सुचारु सम्मेलन संचालन के लिए एक भाँटा की स्थापना हुई।
- वार्सिन सम्मेलन में भूमी का क्षेत्राधिकार व औद्योगिक विकास को ध्यान में रखा गया था, लेकिन यूरोपीय राज्यों ने भूमिका को अपना नहीं माना क्योंकि वे कई भूभागों पर दावा करते थे जो एकत्र नहीं हुए।

विभिन्न यूरोपीय देशों के भूदृष्टि में वर्णन

श्रौत  $\Rightarrow$  अल्पीत्या, मोल्का, धूमिल, भाइवी नाल भादि  
इत्थेण  $\Rightarrow$  मिल भवति

इलेक्ट्रॉन → मिल, ध्वनि, दृश्य, गंध, स्वाद, रस, शक्ति, ताप, प्रकाश, चुंबकत्व, अम्लता, क्षारीयता, विद्युतचुम्बकीय विकिरण, आदि।

અમંતી = ~~૦૦૦૦૦૦~~, ~~૦૦૦૦૦૦~~, ~~૦૦૦૦૦૦~~, ~~૦૦૦૦૦૦~~

कुल्लुवाल = कुल्लुवाल, पूवी मोजाविक